65

‘‘अनुत्तरित प्रार्थनाएं?’’

(15:24, 28, 3े–33)

1990 में गर्थ ब्रुक्स ने ‘‘अनआन्सर्ड प्रेयर्स’’ शीर्षक से एक गीत जारी किया।[1] कहानी एक जवान की है, जो बार–बार एक युवती के लिए प्रार्थना करता था कि वह उसकी पत्नी बन जाए, पर ऐसा हुआ नहीं। बाद में जीवन में वह स्त्री मिली और उसे अहसास हुआ कि उसके साथ विवाह करके वह गलती ही करता। गीत का समापन इन शब्दों से होता है: ‘‘परमेश्वर के कई सबसे बड़े दान अनुत्तरित प्रार्थनाएं ही हैं।’’ मैं इस तथ्य की सराहना करता हूं कि एक देशीय और पश्चिमी स्टार ने परमेश्वर और प्रार्थना पर गाया, परन्तु गीत की थियोलॉजी इच्छा किए जाने के लिए कुछ छोड़ देती है। परमेश्वर ने उस जवान की प्रार्थना का उत्तर *दिया* पर उसका उत्तर ‘‘नहीं’’ में था। परमेश्वर अपने बच्चों की प्रार्थनाओं के उत्तर देता है,[2] पर आवश्यक नहीं कि उसका उत्तर ‘‘हां’’ में ही हो। कई बार उसका उत्तर ‘‘नहीं,’’ ‘‘थोड़ी प्रतीक्षा कर,’’ या कोई और उपयुक्त उत्तर होता है।

‘‘संवाद की आवश्यकता (15:14–29)’’ पाठ में हमने रोम को पौलुस के पत्र की अन्तिम टिप्पणियों पर अध्ययन आरम्भ किया था। हमने देखा कि पौलुस ने अपने सफ़र की योजनाओं की रूपरेखा बनाई। पहले उसने ‘‘यरूशलेम के पवित्र लोगों के कंगालों के लिए कुछ चन्दा’’ (15:26) लेकर यरूशलेम जाना था। फिर उसने रोम जाना था और वहां से उसकी योजना स्पेन जाने की थी (आयतें 24, 28)। यह बताने के बाद पौलुस ने अपने पाठकों से कहा कि वे प्रार्थना करें कि वे अपनी योजनाओं को पूरा करने के योग्य हो सकें और वह काम पूरा कर पाएं, जो करने की उसने आशा की थी।[3] उसने कहा, ‘‘और हे भाइयो; मैं यीशु मसीह का जो हमारा प्रभु है और पवित्र आत्मा के प्रेम का स्मरण दिला कर, तुम से विनती करता हूं, कि मेरे लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने में मेरे साथ मिलकर लौलीन रहो’’ (आयत 30)।[4]

पौलुस की विनती भावना और जोश से भरी थी। ‘‘मैं तुम से विनती करता हूं [*parakaleo*] का अर्थ है ‘‘मैं तुम से भीख मांगता हूं’’ (JB), ‘‘मैं तुम से प्रार्थना करता हूं’’ (KJV), ‘‘मैं तुम से सविनय निवेदन करता हूं’’ (NEB)।[5] उसने ‘‘हमारे प्रभु यीशु मसीह के [अधिकार से] और पवित्र आत्मा के प्रेम [के आधार पर]’’ सविनय निवेदन किया।[6] प्रार्थना करते हुए, वह नहीं चाहता था कि वे, ऊपरी तौर पर या प्रयास रहित प्रार्थना करें कि ‘‘पौलुस के साथ हों,’’ उसने उनसे उसके साथ ‘‘मिलकर *लौलीन रहने*’’ को कहा। ‘‘लौलीन’’ शब्द *sunagonizomai* अर्थात *sun* (‘‘के साथ’’) जमा *agonizomai* (‘‘कोशिश’’) से लिया गया है। *Agonizomai* शब्द वही है जिससे अंग्रेज़ी का *‘‘agonize’’* (संघर्ष) शब्द निकला है। *Sunagonizomai* ऐसा शब्द था जिसका इस्तेमाल खेलों के सम्बन्ध में किया जाता था जिसमें *एक टीम* को मिलकर काम करना और जीतने के लिए बड़ा प्रयास करना पड़ता था।[7] पौलुस ने अपने पाठकों से प्रार्थना करने वाली उसकी टीम का भाग बनने के लिए कहा।

पौलुस अपने पाठकों से किस बात के लिए प्रार्थना करवाना चाहता था ? उसने कहा, ''कि मैं यहूदिया के अविश्वासियों से बचा रहूं, और मेरी वह सेवा जो यरूशलेम के लिए है, पवित्र लोगों को भाए। और मैं परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास आनन्द के साथ आकर तुम्हारे साथ विश्राम पाऊं'' (आयतें 31, 32)। इस पाठ के शेष भाग में हम पौलुस की प्रार्थना की विनतियों को देखेंगे कि वे कहीं न कहीं कालक्रम के अनुसार हैं। हम उसकी तुलना जो पौलुस ने चाहा था उससे करेंगे जो वास्तव में उसे मिला। जहां तक हमें मालूम है उसकी हर विनती का उत्तर ''हां'' के साथ दिया गया था, पर हर ''हां'' में कुछ शर्तें थीं। शर्तों के सहित या बिना हम आश्वस्त हो सकते हैं कि पौलुस की कोई प्रार्थना ''अनुत्तरित प्रार्थना'' नहीं थी।

यरूशलेम में ग्रहण किया जाना? (15:31ख)

जो पौलुस ने चाहा

पौलुस ने रोम के मसीही लोगों से प्रार्थना करने को कहा कि ''मेरी वह सेवा जो यरूशलेम के लिए है, पवित्र लोगों को भाए'' (आयत 31ख)। ''यरूशलेम के लिए उसकी सेवा'' वहां के जरूरतमंद मसीही लोगों के लिए चंदा था (देखें आयतें 25, 26)। पौलुस को उम्मीद थी कि इस चंदे से अन्यजातियों और यहूदियों के बीच सम्बन्ध सुधरेंगे। परन्तु यदि यहूदी मसीही अन्यजाति मसीहियों द्वारा भेजे गए दान को लेने से इनकार कर देते, तो स्थिति बेहतर होने के बजाय और बदतर हो जाती। आप को कैसा लगेगा यदि आप ने किसी को कोई उपहार भेजा हो और उसे पाने वाला या पाने वाली उसे लेने से इनकार कर दे ?

यरूशलेम के मसीही लोगों के इस दान को स्वीकार न करने के ऐसे बहुत से कारण थे। एक कारण घमण्ड हो सकता है। कई लोग इतने घमण्डी होते हैं कि अत्यधिक आवश्यकता होने के बावजूद वे किसी की मदद लेना पसन्द नहीं करते। हमें न केवल अनुग्रह से देने वाले होने की आवश्यकता है बल्कि अनुग्रह से लेने वाले होने की भी आवश्यकता है। फिर यरूशलेम के मसीही लोग इस दान को इसलिए भी लेने से मना कर सकते थे क्योंकि वे पौलुस और उसके काम को स्वीकृति नहीं देते थे। पौलुस का यहूदिया से आए मसीही[8] लोगों द्वारा पहले विरोध हो चुका था (देखें प्रेरितों 15:1, 2)। वे उस धन को कड़ाई से लेने से इनकार कर सकते थे जिससे यह न लगे कि वे पौलुस की सेवकाई का समर्थन करते हैं।

पौलुस को आभास था कि ऐसा हो सकता है कि अन्यजाति मण्डलियों द्वारा भेजी गई सहायता को लेने से इनकार कर दिया जाए। इसलिए उसने अपने पाठकों से यह प्रार्थना करने के लिए कहा कि इसे स्वीकार कर लिया जाए।

जो पौलुस को मिला

क्या उस दान को स्वीकार कर लिया गया ? हम पक्का नहीं कह सकते।[9] परन्तु इतना जानते हैं कि पौलुस के यरूशलेम पहुंचने पर कलीसिया के सदस्यों तथा अगुओं द्वारा उसका स्वागत खुले मन से किया गया था (प्रेरितों 21:17–20क)। बाद में पौलुस ने रोमी हाकिम फेलिक्स को बताया, ''मैं अपने लोगों को दान पहुंचाने [यरूशलेम आया]'' (प्रेरितों 24:17)। बहुत से

लेखकों द्वारा यह माना जाता है कि ''दान'' यरूशलेम के पवित्र लोगों को स्वीकार्य होने का प्रमाण नहीं है। यदि ऐसा था तो परमेश्वर ने प्रार्थना के उस भाग का उत्तर ''हां'' में दिया।

परन्तु यह ''हां'' शर्तों सहित थी: ''हां, दान स्वीकार कर लिया जाएगा, परन्तु यदि तुम उन शर्तों से सहमत हो जो तुम्हारे जीवन को खतरे में डाल देंगी।'' प्रेरितों 21 में पौलुस के यरूशलेम पहुंचने के विवरण को देखें। कलीसिया के अगुओं ने कहा कि क्षेत्र के कई यहूदी मसीहियों को पौलुस पर संदेह था, जिन्हें लगता था कि उसने यहूदी विरासत को छोड़ दिया है (आयतें 20ख, 21)। अगुओं ने उससे मन्दिर में जाकर एक भेंट चढ़ाने में भाग लेने का आग्रह किया (आयतें 22-25)।[10] जैसा कि हम देखेंगे जब पौलुस उनकी शर्त मान गया तो इसका परिणाम विनाश हुआ।

यरूशलेम में स्वीकार किए जाने की पौलुस की प्रार्थना का उत्तर परमेश्वर ने दे दिया? बेशक उसने दिया और सम्भवतया उसने कहा, ''हां।'' परन्तु यह उत्तर ''हां, परन्तु ...'' था।

यरूशलेम में बचाव? (15:31क)

जो पौलुस ने चाहा

पौलुस न केवल विश्वासियों द्वारा स्वीकार किया जाना, बल्कि यह भी चाहता था कि अविश्वासियों से बच जाए: ''कि मैं यहूदिया के अविश्वासियों[11] से बचा रहूं'' (आयत 31क)। ''यहूदिया के अविश्वासी'' वे यहूदी लोग थे जिन्होंने यीशु को मसीहा मानकर अपने प्रभु के रूप में उसके पीछे चलने से इनकार कर दिया था।

यरूशलेम में गैर मसीही यहूदियों द्वारा किए जाने वाले व्यवहार के प्रति चिंतित होने का पौलुस के पास हर कारण था। उनके लिए वह विश्वास का विद्रोही था। कई लोग उसे हमेशा के लिए शांत करना अपना पवित्र दायित्व मानते थे। उसकी मिशनरी यात्राओं के दौरान यहूदी उसे रोमी अधिकारियों के सामने खींच लाए थे (प्रेरितों 18:12), उन्होंने उसे पीटा था (2 कुरिन्थियों 11:24) और उसे पत्थर मार कर मारने की कोशिश की थी (प्रेरितों 14:5)। पहले उसके मनपरिवर्तन के बाद उसके यरूशलेम पहुंचने पर कइयों ने उसे मार डालने की कोशिश की थी (प्रेरितों 9:28, 29)। आर. सी. बेल्ल ने लिखा है, ''मसीह के प्रति अत्यधिक समर्पण और अपने जाति भाइयों के लिए उसके भावपूर्ण प्रेम के बिना उसको यरूशलेम जाने के लिए कोई और बात प्रेरित नहीं कर सकती थी।''[12]

रोमियों के नाम पत्र लिखना बंद करने के बाद पौलुस ने यरूशलेम की अपनी यात्रा आरम्भ कर दी। वह वहां के खतरों से भली-भांति परिचित था (देखें प्रेरितों 20:23; 21:4, 11); परन्तु उसने कहा, ''... मैं तो प्रभु यीशु के नाम के लिए यरूशलेम में ... मरने के लिए भी तैयार हूं'' (प्रेरितों 21:13)। परन्तु उसे उम्मीद थी कि वह मरेगा नहीं और रोम और स्पेन में जा सकेगा। उसने ''यहूदिया के अविश्वासियों से बचाव'' के लिए प्रार्थना की।

यह बताना आवश्यक है कि ''बचा रहूं'' का अर्थ आवश्यक नहीं कि पकड़े जाने के बाद बचना हो। ''बचा रहूं'' के लिए शब्द *rhuomai* का एक रूप है जिसका अर्थ ''से सम्भालकर रखना'' हो सकता है।[13] KJV में ''से निकला'' है। पौलुस की प्रार्थना अविश्वासियों के साथ

किसी भी झगड़े से निकलने के लिए होनी थी।

जो पौलुस को मिला

क्या परमेश्वर ने बचाए जाने की पौलुस की प्रार्थना का उत्तर दिया? हां परन्तु वैसे नहीं जैसे उसे उत्तर मिलने की उम्मीद होगी।

यरूशलेम में होने वाले भावी खतरे के बारे में पौलुस की चिंता निराधार नहीं थी। मन्दिर में जाने के कलीसिया के अगुओं के सुझाव को मान लेने के बाद वहां एक भीड़ थी जो उसके साथ उससे भी बुरा मानने को तैयार थी (प्रेरितों 21:27-30)। भीड़ के पौलुस को मारने के लिए तैयार होते ही (आयतें 31क, 32ख), प्रभु ने उसे बचा लिया। कैसे? स्वर्गदूत भेजकर? नहीं। यरूशलेम के रहने वाले साथी मसीहियों के द्वारा? नहीं, प्रभु ने उसे यरूशलेम में रोमी सिपाहियों के द्वारा ही बचाया जिन्होंने उसे बन्दी बना लिया था (आयतें 31-34)।

इसके थोड़ी देर बाद चालीस यहूदियों ने "शपथ खाई कि जब तक हम पौलुस को मार न डालें, तब तक खाएं या पीएं तो हम पर धिक्कार" (23:12; देखें आयत 13)। फिर से प्रभु ने पौलुस प्रेरित के भानजे का (आयतें 16-22) और कुछ रोमी सिपाहियों का इस्तेमाल करते हुए उसे बचा लिया। सिपाही उसे बांधकर कैसरिया में ले गए जहां उसे कैद किया गया था (आयतें 23-35)। दो साल बाद यहूदियों ने पौलुस को घात लगाकर मार डालने का षड्यन्त्र रचा (25:1-3)। इस बार प्रभु ने पौलुस प्रेरित द्वारा रोमी नागरिक के रूप में कैसर की दुहाई देने के अपने अधिकार का इस्तेमाल करने के द्वारा बचाया (आयतें 9-12)। कई साल पहले प्रभु ने जन्म से रोमी नागरिकता देकर उसके इस बचाव की तैयारी की थी (देखें 22:25-28)।[14]

एक बार फिर पौलुस की प्रार्थना का परमेश्वर का उत्तर "हां" में था: "हां, तुझे अविश्वासियों के हाथ से छुड़ाया जाएगा, पर उन ढंगों से जिनका तुम ने कभी अनुमान भी नहीं लगाया।" फिर से परमेश्वर का उत्तर था, "हां, *परन्तु* ...।"

रोम की यात्रा? (15:32)

जो पौलुस ने चाहा

पौलुस बड़ी देर से रोम जाने के लिए प्रार्थना कर रहा था (देखें रोमियों 1:9ख, 10)। अब हमारे वचन पाठ में, यरूशलेम में ग्रहण किए जाने और बचाव की अपनी इच्छा की बात करने के बाद उसने कहा, "और मैं परमेश्वर की इच्छा से तुम्हारे पास आनन्द के साथ आकर तुम्हारे साथ विश्राम पाऊं" (15:32)। यदि यरूशलेम में सब कुछ वैसे होता जैसे पौलुस ने चाहा था तब भी यह तनाव भरा समय ही होना था। अन्त में रोम में पहुंचकर उस नगर के मसीही लोगों की संगति से ताज़गी पाने का आनन्द कितना अच्छा होना था! जे. बी. फिलिप्स के अनुवाद में है, "फिर मैं प्रसन्न चित्त होकर ... तुम्हारे पास आऊंगा और हो सकता है कि तुम्हारे साथ थोड़ा छुट्टी का समय बिताकर आनन्द करूं।"

जो पौलुस को मिला

क्या परमेश्वर ने रोम जाने की पौलुस की प्रार्थना का उत्तर दिया? बेशक दिया। परन्तु फिर

"हां" में शर्तें थीं।

सामान्य परिस्थितियों में पौलुस को यरूशलेम और फिर रोम जाने के लिए लगभग तीन महीने का समय लग जाता। इसके बजाय तीन महीने के उस सफ़र को तीन साल या उससे अधिक लगे। पौलुस ने कैसरिया की जेल में बिना योजना के कम से कम दो साल बिताए (देखें प्रेरितों 24:27)। रोम की जेल यात्रा के दौरान कैसर की दोहाई देने के बाद उसने मालटा में बिना योजना के तीन महीने बिताए (देखें 28:11क)।

मसीह में अपने भाइयों और बहनों की संगति का आनन्द लेने के लिए स्वतन्त्र सुसमाचार प्रचारक के रूप में रोम पहुंचने के बजाय वह एक कैदी के रूप में वहां पहुंचा। जाते-जाते रोम के मसीही लोगों से मिलकर स्पेन को जाने के बजाय (रोमियों 15:24), उसने कैसर के सामने पेश किए जाने की प्रतीक्षा करते हुए बेड़ियों में रोम में अगले दो साल बिताए (देखें प्रेरितों 28:30)। परमेश्वर का उत्तर था "हां, परन्तु ..." यानी "हां, अन्त में तू रोम में पहुंच जाएगा, पर वैसे नहीं जैसे तू ने सोचा था।"

स्पेन में सुसमाचार प्रचार (15:24, 28, 32)

जो पौलुस ने चाहा

प्रार्थना के लिए पौलुस की विनती में स्पेन का विशेष रूप से कोई उल्लेख नहीं है, परन्तु वह प्रस्तावित यात्रा निश्चय ही पौलुस के मन में थी जब उसने रोम के मसीही लोगों से प्रोत्साहित होने की बात की (आयत 32)। इसके थोड़ा पहले उसने बताया था कि थोड़ी देर उनके साथ रहने का आनन्द लेने के बाद उसे स्पेन जाने में उनके द्वारा सहायता मिलेगी (आयत 24; देखें आयत 28)। यह कल्पना करना कठिन होगा कि पौलुस ने रोमी साम्राज्य के पश्चिमी छोर तक अपने प्रयास फैलाने की प्रार्थना न की हो।

जो पौलुस को मिला

यह कल्पना करते हुए कि पौलुस ने स्पेन पहुंचने की प्रार्थना की, हम चकित होते हैं, "परमेश्वर का उत्तर क्या था? क्या पौलुस कभी स्पेन में पहुंचा?" हम इन प्रश्नों का उत्तर पक्के तौर पर नहीं दे सकते। चार्ल्स हॉज ने कहा है, "नये नियम में या आरम्भिक [कलीसिया] के लेखकों ने कहीं भी उसके ऐसा करने का कोई ऐतिहासिक दस्तावेज़ नहीं है।" परन्तु फिर हॉज ने जोड़ा कि इनमें से अधिकतर लेखक इसे मान लेते प्रतीत होते हैं।[15] क्लेमेंट ऑफ़ रोम ने पौलुस के विषय में लिखा है: "पूरे संसार को उसने धार्मिकता सिखाई, और पश्चिम की सीमाओं [पौलुस के समय में स्पेन रोमी साम्राज्य की पश्चिमी सीमा थी] में पहुंचकर उसने हाकिमों के सामने अपनी गवाही दी।"[16] पौलुस ऐसा आदमी था जिसने लक्ष्य पर ध्यान लगााने के बाद मुड़ने से इनकार कर दिया,[17] सो निश्चित रूप से यह सम्भव है कि बाद में उसने स्पेन में सुसमाचार पहुंचाने की अपनी योजनाओं को पूरा किया। परन्तु मैं फिर कहता हूं कि हमें इसका पक्का पता नहीं चल सकता।

कई विद्वानों का मानना है कि प्रेरितों के काम के अन्त में इन घटनाओं के लिखे जाने के थोड़ी देर बाद पौलुस कैसर के सामने पेश हुआ, छोड़ दिया गया और उसने अपनी यात्राएं फिर से

आरम्भ कर दीं। पौलुस ने 1 तीमुथियुस और तीतुस सम्भवतया इसी समय लिखे। माना जाता है कि तब रोमी अधिकारियों द्वारा सताव आरम्भ करने पर, पौलुस को गिरफ्तार करके अन्ततः मृत्यु दे दी गई (देखें 2 तीमुथियुस 4:6-8)। यदि पौलुस स्पेन में गया, तो यह रोम की उसकी कैद के बीच के स्वतन्त्रता के समय के दौरान ही होगा।

यदि पौलुस स्पेन में जाने के अयोग्य था, तो परमेश्वर का उत्तर था ''नहीं, पर मैंने तेरे करने के लिए और महत्वपूर्ण काम रखा है।'' यदि पौलुस स्पेन में *गया,* तो परमेश्वर का उत्तर फिर ''हां, परन्तु ...'' यानी ''हां, परन्तु तुझे अपनी बनाई पहली योजना से कहीं *अधिक* प्रतीक्षा करनी होगी।'' दोनों ही स्थितियों में हम पक्का जान सकते हैं कि परमेश्वर ने पौलुस की प्रार्थना का उत्तर दिया।

सारांश (15:33)

रोम के मसीही लोगों से अपनी प्रार्थनाओं में उसके साथ बने रहने के लिए कहने के बाद पौलुस ने एक संक्षिप्त आशीष वचन जोड़ दिया ''जैसा कि वह आम तौर पर करता था [15:5, 6, 13]''; ''शान्ति का परमेश्वर तुम सब के साथ रहे। आमीन'' (आयत 33)। ''शांति'' (*eirene,* जो *shalom* का यूनानी समानांतर है) सामान्य इब्रानी अभिवादन था। अन्यजातियों के लिए यहूदी प्रेरित ने उस मण्डली के लिए विशेष यहूदी आशीष दी जो सम्भवतया मुख्य रूप से अन्यजाति थी।

हमने इस पाठ का आरम्भ ''अनआन्सर्ड प्रेयर्स'' अर्थात अनुत्तरित प्रार्थनाओं नामक गीत से किया था। गीत लिखने वाले की भली मंशाओं के बावजूद हमने सुझाव दिया कि प्रभु के निकट रहने वालों के लिए कोई प्रार्थना अनुत्तरित प्रार्थना नहीं होती। हो सकता है कि परमेश्वर हमारी हर प्रार्थना का उत्तर वैसे न दे जैसे हम चाहते हैं, पर हम यह पक्का जान सकते हैं कि प्रभु उत्तर देगा।[18] चाहे उत्तर वही हो जो उसने पौलुस को दिया था: ''हां, परन्तु। ...''

क्या पौलुस परमेश्वर के उत्तर से संतुष्ट था? आयत 32 में ''परमेश्वर की इच्छा'' शब्दों को न भूलें: ''और मैं *परमेश्वर की इच्छा से* तुम्हारे पास आनन्द के साथ आकर तुम्हारे साथ विश्राम पाऊं।'' पौलुस अपनी इच्छा के आगे परमेश्वर की इच्छा को रखने को हमेशा तैयार रहता था (देखें रोमियों 1:10; 1 कुरिन्थियों 4:19)। जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने लिखा है, ''प्रार्थना का उद्देश्य ... परमेश्वर की इच्छा को हमारी इच्छा के आगे झुकाना नहीं, बल्कि हमारी इच्छा को उसकी इच्छा से मिलाना है।''[19]

''अनआन्सर्ड प्रेयर्स'' के लेखकों ने हो सकता है कि सही शब्दों का इस्तेमाल न किया हो, पर उनका मूल विचार सही था। परमेश्वर की बड़ी-बड़ी आशिषें तब दी जाती हैं, जब वह हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर ''नहीं'' में या ''हां, परन्तु ...'' में देता है।

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

इस प्रस्तुति का एक और शीर्षक ''जब परमेश्वर 'हां, परन्तु ...' कहता है, हो सकता है।'' एक लेखक ने सुझाव दिया कि पौलुस को परमेश्वर का उत्तर हर बार ''हां और नहीं'' था।

उदाहरण के लिए रोम जाने की उसकी इच्छा के बारे में परमेश्वर ने कहा, ''हां, तू रोम में जाएगा; पर *नहीं* यह सुखद यात्रा नहीं होगी।'' यदि इस ढंग का इस्तेमाल किया जाए तो आप इस पाठ का नाम ''जब परमेश्वर 'हां *और* नहीं' कहता है।''

इस पाठ की तैयारी करते समय अपने आपको प्रेरितों 20:1–27:1 की घटनाओं से परिचित करना आवश्यक है। पाठ पढ़ाते समय विस्तार से उन बातों को बताएं जो उपयोगी हैं।

टिप्पणियां

[1]पैट एल्गर, लैरी बेसटीयन, एण्ड गार्थ बुक्स, ''अनआंसर्ड प्रेयर्स'' (1990). [2]परमेश्वर हमेशा अपने बच्चों की प्रार्थनाओं का उत्तर देता है। परन्तु उनकी प्रार्थनाओं के विषय में ऐसी कोई प्रतिज्ञा नहीं है जो उसकी संतान नहीं हैं। [3]पौलुस अक्सर अपने पाठकों से उसके लिए प्रार्थना करने को कहता था (देखें 2 कुरिन्थियों 1:11; इफिसियों 6:19; कुलुस्सियों 4:3; 1 थिस्सलुनीकियों 5:25; 2 थिस्सलुनीकियों 3:1)। [4]यह नये नियम की उन कई आयतों में से एक है जो परमेश्वरत्व के तीनों सदस्यों अर्थात परमेश्वर, मसीह और पवित्र आत्मा की बात करती हैं (देखें मत्ती 3:16, 17; 28:19; रोमियों 8:9, 11; 2 कुरिन्थियों 13:14; इफिसियों 2:18; 1 पतरस 1:2)। [5]*रोमियों, 4* पुस्तक में आए पाठ ''बदला हुआ जीवन (12:1, 2)'' पाठ में *parakaleo* पर नोट्स देखें। [6]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 490 से लिया गया। [7]ब्रूस बार्टन, डेविड वीरमन, एण्ड नील विल्सन, *रोमन्स,* लाइफ एप्लीकेशन बाइबल कमैंट्री (व्हीटन, इलिनोइस: टिंडेल हाउस पब्लिशर्स, 1992), 284. [8]यहूदिया फलस्तीन का दक्षिणी राज्य था। यरूशलेम उस राज्य का प्रमुख नगर था। [9]लूका ने प्रेरितों के काम में पौलुस की यात्राओं तथा गतिविधियों के विवरण में चन्दे की बहुत कम बात की है। [10]इस सुझाव से शारीरिक और आत्मिक खतरा बन गया; परन्तु ''सब मनुष्यों के लिए सब कुछ'' बनने को तैयार (1 कुरिन्थियों 9:22), पौलुस इससे सहमत हो गया।

[11]''अविश्वासियों'' की जगह कई अनुवादों में ''आज्ञा न मानने वाले'' या इससे मिलता जुलता शब्द है; परन्तु यहां यूनानी शब्द का अर्थ ''आज्ञा न मानने वाले'' है। एक बार फिर पौलुस ने आज्ञाकारी *विश्वास* होने के महत्व को दिखाया। [12]आर. सी. बेल्ल, *स्टडीज़ इन रोमन्स* (आस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1957), 183. [13]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़. अंगर, एण्ड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एण्ड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्‌स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 157. [14]रोपर, 333–36 में पौलुस की रोमी नागरिकता पर चर्चा की गई है। [15]चार्ल्स हॉज, *रोमन्स,* दि क्रॉसवे क्लासिक कमैंट्री (व्हीटन, इनिलोइस: क्रॉसवे बुक्स, 1993), 387. [16]क्लेमेंट ऑफ रोम, *1 क्लेमेंट 5:7.* [17]अपनी दूसरी मिशनरी यात्रा पर पौलुस ने आसिया के क्षेत्र में जाना चाहा, परन्तु आत्मा ने उसे जाने की अनुमति नहीं दी (प्रेरितों 16:6)। बाद में पौलुस की तीसरी यात्रा पर अन्त में इफिसुस में पहुंचने पर वह आसिया में था (देखें प्रेरितों 18:19–21; 19:1)। [18]आप प्रार्थना के अपने जीवन से व्यक्तिगत उदाहरण दे सकते हैं। [19]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 389.